Dr. Madhukarrao Wasnik

PWS Arts and Commerce College

Kamptee Road, Nagpur-26

Books Published in 2018-2019

Sr. No.	Name of the Book	Name of Author	Text Book/ Ref Book	Publisher	Date
1.	Sahitya Manjiri ISBN: 978-93-83132-68-3	Dr. Mithilesh J. Awasthi	Text Book	Raghav Publisher and Distributer, Nagpur	2018
2.	Sahitya Vaibhav ISBN: 978-93-83132-75-1	Dr. Mithilesh J. Awasthi	Text Book	Raghav Publisher and Distributer, Nagpur	2018
3.	Avagunjan ISBN: 978-93-84899-71-4	Dr. Mithilesh J. Awasthi	Anthology of Poems	Visha Hindi Sahitya Parishad, Ne Delhi	2019
4	Kaha Hai Nadi Mayi ISBN: 978-93-84899-70-7	Dr. Mithilesh J. Awasthi	Short Stories	Visha Hindi Sahitya Parishad, Ne Delhi	2019

Principal

Dr. Yeshwant Patil

साहित्य वैभव

संपादक मंडल

बसंत त्रिपाठी
मधुलता व्यास
मिथिलेश अवस्थी

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के
तृतीय वर्ष हेतु हिन्दी साहित्य विषय की स्वीकृत पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-83132-75-1

राघव पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
नागपुर । जबलपुर

S.r. Naydewe

साहित्य वैभव

राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के
बी.ए. तृतीय वर्ष हेतु हिन्दी साहित्य विषय की स्वीकृत पाठ्यपुस्तक

: संपादक मंडल :

बसंत त्रिपाठी
मधुलता व्यास
मिथिलेश अवस्थी

राघव पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
नागपुर | जबलपुर

ISBN : 978-93-83132-75-1

साहित्य वैभव : संपादक मंडल

प्रथम संस्करण : २०१८

© लेखक

प्रकाशक :
राघव पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
महल, नागपुर-४४० ०३२
शाखा : जबलपुर

मुद्रक :
महालक्ष्मी ऑफसेट,
नागपुर

मूल्य : ₹ ८०-००

संपादकीय

साहित्य मनुष्य की नैतिक और सांस्कृतिक ज़रूरतों को गढ़ने के साथ-साथ उसे आकार भी देता है इसलिए उसका अवलोकन और निर्माण दोनों ही किसी भी जीवित सभ्यता के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक भाषायी समाज का साहित्य उस भाषा के इतिहास, वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं का दर्पण और निर्देशक तत्त्व होता है। साहित्य की बुनियाद चूँकि यथार्थ और आदर्श के समन्वय एवं संतुलन पर टिकी होती है इसलिए पाठ्यक्रम के लिए पुस्तक निर्मित करते समय दोनों ही पक्षों के संतुलन पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत होती है ताकि विद्यार्थियों के भीतर आलोचनात्मक विवेक का निर्माण हो सके।

'साहित्य वैभव' राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के बी.ए. हिन्दी साहित्य के पंचम और छठे सेमेस्टर के निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार की गई है। यह पुस्तक मुख्यतः आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन है। रचनाओं का चयन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि आधुनिक हिन्दी साहित्य के मुख्य विचार-प्रवाहों और कलात्मक प्रयोगों को इसमें सम्मिलित किया जाए। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि साहित्य के विद्यार्थी भाषा और साहित्य की विकासमान अवस्था को इन रचनाओं के माध्यम से जान सकें व आत्मसात कर सकें।

इस पुस्तक के दो खण्ड हैं, पहला - काव्य केन्द्रित है और दूसरा गद्य। काव्य खण्ड में जयशंकर प्रसाद से लेकर नरेश सक्सेना तक अर्थात छायावाद से लेकर समकालीन कविता तक की काव्य-यात्रा का प्रातिनिधिक रूप है। गद्य-खण्ड में हिन्दी गद्य की चर्चित विधाओं का श्रेष्ठतम रूप शामिल है।

इस पुस्तक में शामिल रचनाकारों के प्रति संपादक मंडल विशेष रूप से आभारी है। संपादक मंडल इस बात पर विश्वास करता है कि रचनाकारों की रचनाशीलता से

ISBN 978-93-83132-68-3

राघव
राघव पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
नागपुर । जबलपुर

साहित्य मंजिरी

साहित्य मंजिरी

संपादक मंडल

बसंत त्रिपाठी
मधुलता व्यास
मिथिलेश अवस्थी

राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के
बी.ए. तृतीय वर्ष हेतु अनिवार्य हिन्दी विषय की स्वीकृत पाठ्यपुस्तक

साहित्य मंजिरी

राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के
बी.ए. तृतीय वर्ष हेतु अनिवार्य हिन्दी विषय की स्वीकृत पाठ्यपुस्तक

: संपादक मंडल :

बसंत त्रिपाठी

मधुलता व्यास

मिथिलेश अवस्थी

SRM S. R. MUNDHRIKA
Book & General Stores
Ashok Chowk, NAGPUR-17
Mob: 9822714308, 955298...

राघव

राघव पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स

नागपुर | जबलपुर

ISBN : 978-93-83132-68-3

साहित्य मंजिरी : संपादक मंडल

प्रथम संस्करण : २०१८

© लेखक

प्रकाशक :
राघव पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
महल, नागपुर-४४० ०३२
शाखा : जबलपुर

मुद्रक :
महालक्ष्मी ऑफसेट,
नागपुर

मूल्य : ₹ ७५-००

संपादकीय

साहित्य, समय की आवश्यकता सदैव से रही है। वर्तमान समय में बड़ी तेजी से बदलती जीवन शैली एवं मूल्यों का प्रभाव पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में हावी होता दिखाई पड़ रहा है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया से प्रत्येक समाज तथा वर्ग को निर्विकल्प रूप से गुजरते हुए उसके परिणामों का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि परिवर्तन के इस दौर में सारा कुछ वर्जित नहीं है तथापि बहुत कुछ चिंतनीय अवश्य है, फलतः बदलाव आता जा रहा है नैतिकता एवं संवेदना के मानदण्डों में।

आधुनिकता एवं भूमंडलीकरण के प्रभाव तथा मल्टीनेशनल संस्कृति की लगातार दखल के चलते नई पीढ़ी के 'आज' व 'कल' दोनों के सामने कुछ ऐसी बड़ी एवं गंभीर चुनौतियाँ उपस्थित हो गई हैं जिनका सामना करना तथा उन्हें पराभूत करना जटिल हो गया है। ऐसे समय में भाषा तथा साहित्य ही वे साधन हैं जो नई पीढ़ी को सजग, सबल व समर्थ बना कर उसमें मानवीय गुणों का विकास करते हुए स्वाभिमानी नागरिक बना सकते हैं। यह स्वयंसिद्ध है कि भाषा के माध्यम से सशक्त एवं साहित्य के माध्यम से सुसंस्कृत हुई पीढ़ी की भूमिका समाज एवं राष्ट्र के विकास तथा नवनिर्माण में अहम होती है।

राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के बी. ए. पंचम एवं छठे सेमेस्टर के अनिवार्य हिन्दी हेतु निर्देशित पाठ्यक्रम के अनुसार इस पुस्तक को आकार देते समय इस बात का पूरा प्रयास किया गया है कि भाषा तथा साहित्य के अध्ययन के प्रति विद्यार्थियों की रुचि बढ़े, उन्हें भाषायी सामर्थ्य, रचना वैविध्य के साथ ही शिल्प वैशिष्ट्य का सम्यक ज्ञान प्राप्त हो सके।

रचनाओं का चयन करते समय विशेष ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थियों के सम्मुख अलग-अलग कालखंड के प्रतिनिधि रचनाकारों तथा साहित्य की विविध

मिथिलेश अवस्थी

स्थान : ग्राम- गीदम, जिला- दंतेवाड़ा (छत्तीसगढ़)
ा : एम.ए. (हिन्दी, समाजशास्त्र), एम.फिल. (हिन्दी), पी-एच.डी. (हिन्दी)
ति : सहयोगी आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग), डॉ. एम.डब्ल्यू.पी.डब्ल्यू.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कामठी मार्ग, नागपुर- 440-026

शन : 1. इम्तहान रोज़ होते हैं (काव्य संग्रह)
2. चिन्तन के क्षण (विश्लेषण-विवेचन)
3. यशपाल के उपन्यासों में युग चेतना (शोध प्रबंध)
4. अहिन्दी भाषी और हिन्दी रंगमंच (लघु शोध प्रकल्प)
5. कहाँ हैं नदी माई...(लघुकथा संग्रह)

ष : संपादक मंडल द्वारा प्रकाशित ग्रंथः- 'डॉ. मिथिलेश अवस्थी:सृष्टि एवं दृष्टि'।

ान : 'साहित्य शिरोमणि' 2007, 'साहित्य सुमन' 2008, 'पं. रविशंकर शुक्ल स्मृति समाज सेवा पुरस्कार' 2008, 'राष्ट्र भाषा गौरव पुरस्कार' 2011, 'साहित्य भूषण' 2011, 'साहित्य सागर' 2012, 'साहित्य मनीषी सम्मान' 2012, 'मंच सम्मान' 2013, 'लघुकथा मंच सम्मान' 2016, 'हिन्दी सेवी सारस्वत प्रचारक सम्मान' 2017

र्शदाता : 'दिवान' (त्रैमासिक), नागपुर (महाराष्ट्र)
: 'हरित वसुंधरा' (त्रैमासिक), पटना (बिहार)

ीवन सदस्य : भारतीय हिन्दी परिषद, लखनऊ
: नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली
: महाराष्ट्र हिन्दी परिषद, सांगली
: 'क्लिक' (Centre For Literary Interaction & Creativity)

नक : राष्ट्रीय हिन्दी परिषद, मेरठ
: अ.भा. प्रगतिशील मंच, पटना

ंरक्षक : अ.भा. हिन्दी सेवी संस्थान, इलाहाबाद

न्य : राष्ट्रभाषा हिन्दी विकास परिषद, दरभंगा
: भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर (बिहार)
: शेक्सपियर सोसायटी आफ सेंट्रल इंडिया

जक : 'शोध सत्संग' (विविध विषयक आनुसंधानिक विमर्श)

ारिक्त : रोगों से मुक्ति का सहज अभ्यास 'इजी हेल्थ-नो वेल्थ' (नि:शुल्क कार्यशाला)
: योग, प्राणायाम, व्यायाम, ध्यान,

र्क : 62, पी. एंड टी. कॉलोनी, राणाप्रताप नगर, नागपुर - 440-022
: 9422108927
Email : mja1827@gmail.com, mja1827@yahoo.in

अवगुंजन
प्रकाशक
विश्व हिंदी साहित्य परिषद्
शालीमार बाग, दिल्ली-110088
मो. -9811184393
vhspindia@gmail.com
₹ 300

अवगुंजन (हाइकु संग्रह)

मिथिलेश अवस्थी

अवगुंजन

हाइकु संग्रह

मिथिलेश अवस्थी

अवगुंजन

(हाइकु संग्रह)

मिथिलेश अवस्थी

ISBN No. : 978-93-84899-71-4

© कॉपीराइट : लेखक

प्रकाशक : विश्व हिंदी साहित्य परिषद
एडी-94/डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
दूरभाष : 09811184393, 011-47481521
email : vhspindia@gmail.com

मुद्रक : एपेक बिजनेस सोल्यूशन्स प्रा. लि.
4653/21, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।

प्रथम संस्करण : 2019

कुल पृष्ठ : 120

मूल्य : ₹300

AVGUNJAN
By MITHILESH AWASTHI
First Edition : 2019
Published by : Vishva Hindi Sahitya Parishad, Shalimar Bagh, Delhi-110088
Price : ₹300

परिपार्श्व

रचनाकार की भावनाएँ जब शब्द-सेतु बनाती हैं तो सृजन की शुरुआत होती है। कवि के अपने सांवेदिक ज्वार ही अभिव्यक्त होकर विधा का रूप धारण करते हैं।

जापानी विधा 'ताँका', 'रेंगा' और 'हाइकु' के तौर-तरीके, सीमा एवं अनुशासन का पालन करते हुए अपने अंतस्थ भावों को अभिव्यक्त करना विधा-वैविध्य की दृष्टि से विशिष्ट है, किंतु अपने छोटे आकार तथा सीमित मर्यादा के कारण 'हाइकु' का प्रभाव पाठक व श्रोता पर गहराई एवं व्यापक रूप से पड़ता है।

'हाइकु' एक चुनौतीपूर्ण विधा है- रचनाकार तथा पाठक (श्रोता भी) दोनों के लिए। अत्यंत कम शब्दों में अपनी बात पूर्णता के साथ कहना सरल नहीं है। इस विधा का अपना पृथक प्रवाह तथा लय है और यह निर्भर है शब्द-संधान, बिम्ब-प्रयोग, संकेतों की उपस्थिति तथा प्रतीकों की स्थापना पर। 'हाइकु' में सौंदर्य पक्ष अनेक बार इतना प्रबल होता है कि पंक्तियों को ऊपर से नीचे की ओर पढ़ें तो व्यंजना ध्वनित होती है परंतु नीचे से ऊपर की ओर पढ़ें तो अभिधा साकार होती दिखाई पड़ती है। सशक्त 'हाइकु' वास्तव में हाइकुकार के सृजन एवं शिल्प सामर्थ्य का बोध कराते हैं।

मेरा मत है कि अत्यंत सीमित संसाधनों (अक्षर एवं पंक्ति की मर्यादा) में सार्थक और सफल प्रयास (अभिव्यक्ति) का एक नाम 'हाइकु' है। निश्चित आकार एवं अक्षरों की सूक्ष्म मर्यादा का पालन करते हुए उदात्त प्रयोजन तथा तीव्र संप्रेषणीयता का चरित्र इस विधा की मौलिकता है। अनुभूति की व्यापकता और अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता के बीच शब्द-शिल्प का कौशल इसकी आवश्यक शर्त है।

किसी भी भाषा की विधा जब किसी दूसरी भाषा में आकारित की जाती है तो उसके लिए यह आवश्यक होता है कि उसमें मूल भाषा के विधायी अनुशासन का पालन किया जाए। हाँ, मूल भाषा की अंतर्वस्तु में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। बदलते समय के साथ-साथ विनोद के अलावा आदर्श,

मिथिलेश अवस्थी

न्म स्थान : ग्राम- गीदम, जिला- दंतेवाड़ा (छत्तीसगढ़)
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी, समाजशास्त्र), एम.फिल. (हिन्दी), पी-एच.डी. (हिन्दी)
ंप्रति : सहयोगी आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग), डॉ. एम.डब्ल्यू.पी. डब्ल्यू.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कामठी मार्ग, नागपुर - 440 026
काशन : 1. इम्तहान रोज़ होते हैं (काव्य संग्रह), 2. चिन्तन के क्षण (विश्लेषण विवेचन), 3. यशपाल के उपन्यासों में युग चेतना (शोध प्रबंध), 4. अहिन्दी भाषी और हिन्दी रंगमंच (लघु शोध प्रकल्प)
वशेष : संपादक मंडल द्वारा प्रकाशित ग्रंथ:- 'डॉ. मिथिलेश अवस्थी सृष्टि एवं दृष्टि'।
म्मान : 'साहित्य शिरोमणि' 2007, 'साहित्य सुमन' 2008, 'पं. रविशंकर शुक्ल स्मृति समाज सेवा पुरस्कार' 2008, 'राष्ट्र भाषा गौरव पुरस्कार' 2011, 'साहित्य भूषण' 2011, 'साहित्य सागर' 2012, 'साहित्य मनीषी सम्मान' 2012, 'मंच सम्मान' 2013, 'लघुकथा मंच सम्मान' 2016, 'हिन्दी सेवी सारस्वत प्रचारक सम्मान' 2017
रामर्शदाता : 'दिवान' (त्रैमासिक), नागपुर (महाराष्ट्र)
: 'हरित वसुंधरा' (त्रैमासिक), पटना (बिहार)
ाजीवन सदस्य : भारतीय हिन्दी परिषद, लखनऊ
: नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली
: महाराष्ट्र हिन्दी परिषद, सांगली
: 'क्लिक' (Centre For Literary Interaction & Creativity)
रक्षक : राष्ट्रीय हिन्दी परिषद, मेरठ
: अ.भा. प्रगतिशील मंच, पटना
पसंरक्षक : अ.भा. हिन्दी सेवी संस्थान, इलाहाबाद
दस्य : राष्ट्रभाषा हिन्दी विकास परिषद, दरभंगा
: भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर (बिहार)
: शेक्सपियर सोसायटी आफ सेंट्रल इंडिया
योजक : 'शोध सत्संग' (विविध विषयक आनुसंधानिक विमर्श)
तिरिक्त : रोगों से मुक्ति का सहज अभ्यास 'इजी हेल्थ-नो वेल्थ' (नि:शुल्क कार्यशाला)
: योग, प्राणायाम, व्यायाम, ध्यान,
पर्क : 62, पी. एंड टी. कॉलोनी, राणाप्रताप नगर, नागपुर - 440-022
: 9422108927,
Email ... mja1827@gmail.com, mja1827@yahoo.in

कहाँ हैं नदी माई...

प्रकाशक
विश्व हिंदी साहित्य परिषद्
शालीमार बाग, दिल्ली-110088
मो. -9811184393
vhspindia@gmail.com

978-93-84899-70-7
₹ 250

कहाँ हैं नदी माई...
मिथिलेश अवस्थी

कहाँ हैं नदी माई...

(लघुकथा संग्रह)

मिथिलेश अवस्थी

कहाँ हैं नदी माईं...

(लघुकथा संग्रह)

मिथिलेश अवस्थी

ISBN No. : 978-93-84899-70-7

© कॉपीराइट : लेखक

प्रकाशक : विश्व हिंदी साहित्य परिषद
एडी-94/डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
दूरभाष : 09811184393, 011-47481521
email : vhspindia@gmail.com

मुद्रक : एपेक बिजनेस सोल्यूशन्स प्रा. लि.
4653/21, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।

प्रथम संस्करण : 2019

कुल पृष्ठ : 104

मूल्य : ₹250

KAHAN HAIN NADI MAAIN
By MITHILESH AWASTHI
First Edition : 2019
Published by : Vishva Hindi Sahitya Parishad, Shalimar Bagh, Delhi-110088
Price : ₹250

पार्श्वभूमि

लघुकथाओं के प्रकाशन की योजना पर काम शुरू करते ही सबसे पहले यही बात समझ में आई कि पहली लघुकथा अब17 वर्ष की हो चुकी है। बहुत लंबी कहानी पढ़ने के दौरान कई बार उत्पन्न ऊब का ही परिणाम था कि शुरुआती दौर में इस सोच के साथ लिखता रहा कि कहानी हो- छोटी हो। बाद में इन्हें लघुकथा कहना अच्छा लगा।

वस्तुतः रचना किस विधा में साकार होगी इसका कोई निश्चित क्रम न कभी रहा, न अभी है, हो भी नहीं सकता। संभवतः इसीलिए कई लघुकथाओं के बीच का अंतर 4-5 माह तक भी है और कुछ का2-3 दिन भी नहीं।

समय के साथ-साथ विधा के शास्त्रीय पक्ष को जानने-समझने का भी प्रयास किया। कुछ समझ आया और बहुत कुछ आज भी अनुत्तरित है। ...अपने ही मन से अपना अनुशासन तय कर लिखने की प्रक्रिया जारी रही। पटना के डॉ. सतीशराज पुष्करणा, डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह, सांगली के डॉ. विजय गाड़े जैसे सद्भावी सराहते रहे, संकेतों को समझने के प्रयास में सुधार भी होता रहा... जब तक कलम चलेगी, सुधार का यह क्रम चलता ही रहेगा।

मेरी धारणा है कि कथा लिखने की बजाय लघुकथा लिखने में अधिक चुनौतियाँ होती हैं। बहुत कम स्पेस और कम साधन में 'बहुत कुछ' कहना होता है। इन दोनों के समीकरण को साध लेने का ही परिणाम होती है, पूर्णता प्राप्त लघुकथा। हम सभी जानते हैं कि छोटे से कमरे के भीतर तेज़ी से चक्कर लगाना कितना कठिन होता है जबकि बड़े मैदान में दौड़ना बहुत मुश्किल नहीं है। वास्तव में बड़े मैदान में दौड़ने के लिए तेज़ दौड़ने का अभ्यास चाहिए, किंतु